6-7-67 ओम् शान्तिः रात्री क्लास

कचहरी करना भी अच्छा है फिर नां करना भी अच्छा है। अगर झूट बोलते है सच्च नही बताते है तो सैना दण्ड पड़ जाता है। जो बच्चे बाप-दादा पास रिफ्रेश होने आये है उनको बाप दादा कहते है कि कोई भी संशय हो तो, कुछ नां समझा हो, अन्दर मे कोई बात पूछने जैसी है वो अगर नां पूछते है ~~आगर=तो=कोई~~ अपने को ही नुकसान ~~नही~~ पड़ता है। संशय हटा कर ही जाना अच्छा है। नही तो वो अन्दर मे संशय का कांटा रह ही जावेगा। कोदई फिर जाकर ऐसे नही कहे कि बाबा से मिलन नही हुआ। थोड़े बच्चे है। कुछ भी पुछना है तो पूछ सकते है। जरा भी संशय नही रहना चाहिये। बार-2 पूछ सकते है। (बाप कहते है कि मै तो बच्चो का सरवन्ट हूं बच्चो को पावन बनाने लिये। पावन दुनियां का मालिक बनाने लिये।) (कोई भी बात मे झूठ बोलना वो भी पाप है। झूठ से अगर कोई का कल्याण होता है तो वो पाप नही है। अभी तुम बच्चे स्वर्गवासी बन रहे हो। सदगति मे जाने लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। स्वर्ग मे जाने लिये कब कोई पुरुषार्थ करते नही है। नाम मात्रही कह देते है कि स्वर्गवासी हुआ। अब तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। बच्चे समझते है कि हम बाप-दादा पास आये है श्रीमत पर चलने। आगे चल कर तो बहुत-2 आते रहेंगे। और धर्म वालो को भी दृष्टी मिलेगी। देह के सब सम्बन्ध तोड कर अपने बाप को याद करो। यहां पर सभी रावण की शोक वाटिका मे है। आधा कल्प तो है अशोक की वाटिका। सतयुग है अशोक वाटिका। दुःख की तो वहां पर बात ही नही रहती है। अशोक माना ही जिनको कोई शोक नही हो। यहां तो कोई नां कोई बात मे शोक होता है। बिमार होगें तो भी शोक होगा। अब बच्चे जानते है कि हम सुखधाम मे जाते है। समय बहुत कम है। बैग बैगेज तैयार करनी है। सब कुछ तो ट्रान्सफर नही कर सकेंगे। मकान आद है तो वो तो खत्म हो जावेगा। तुम बच्चे जानते हो कि हम नगें ही आये थे अब नगें ही जाना है। शरीर से मनुष्यों का इतना प्यार हो गया है जो अपने को शरीर ही समझ लिया है। देहअभिमानी बन जाते है। आत्मा क्या है वो भी नही जानते है। तुम बच्चो को भी सदैव याद नही रहती है इसलिये ही समझा नही सकते हो। आत्मा तो रहती ही यहां पर है। तिलक भी माथे पर ही देते है नां। आत्मा है सितारे की तरह की। बाप कहते है कि मै भी स्टार हूं। मुझे भी कहते है परमआत्मा। परमधाम मे रहने वाला हूं। तुम बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिये। यह है अविनाशी धन। अभी हम बाप से भविष्य 21 जन्मो लिये धन लेते है। यही सच्ची कमाई साथ मे जावेगी। अभी तुम बच्चे हाथ भर कर जाते हो। तुम्हारी झोली अच्छी रीती भर रही है। झोली भरने वाला है बाप। बच्चे बाप से ही वर्सा लेते है। भारत जब स्वर्ग था तो बेहद का सुख था। लक्ष्मी-नारायण का डायेनेस्टी वां कुल था। रामचन्द्र की भी डायनेस्टी थी। दोनो को ही मिला कर स्वर्ग कहा जाता है। यह है नर्क। तुम सभी बातों को समझ गये हो। निराकार को कहा ही जाता है निराकार नालेज फुल। ज्ञान का सागर। बाप ही सृष्टी की आद मध्य अन्त का राज समझाते है। बाबा वर्सा देते है रावण वर्सा छीनते है। तो अब पुरुषार्थ मे कदम बढाना चाहिये। कुछ भी बात हो तो पूछ सकते हो। पढाई तो सहज है। पढाई भी कब नही बाप की याद भी कब नही छोडनी चाहिये। अपना ही नुकसान कर लेंगे। मान-अपमान आद सब सहन करना है। प्राप्ती बहुत है। तुम जितना भी चाहो तो जमा कर सकते हो। जमा माना जीत नफा माना हार। बाप कहते है कि तुम 21 जन्म तो क्या 50-60 जन्मो तक बहुत सुखी रहते हो। तुम जानते हो कि कितना पुरुषार्थ करना होता है विश्व का मालिक बनने लिये। इस पढाई मे अच्छी रीती लगना चाहिये। शिव बाबा एक है तो उनका शास्त्र भी एक ही होना चाहिये। मनुष्य तो बहुत ही शास्त्र पढते रहते है। बहुतो के चित्र रखते है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हमारे पावं मे पदम है। पदम कोई स्कूल में नही है। यह भी भक्ति मार्ग का ही गायन है। तुम जानते हो कि अभी हम तो विश्व का मालिक बनते है।

बच्चो को बाप दादा का याद प्यार और गुड नाईट